

की जोन प्रकाश स्वामी : हमारे जीवन-परम का प्रश्न है ।

MR. SPEAKER: The Question Hour WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS is over.

Soft loans to Sick Industries

*263 DR. BAPU KALDATE: Will the DEPUTY PRIME MINISTER AND MINISTER OF FINANCE be pleased to state:

(a) whether Government have Changed/extended the scope of soft loans, introduced in 1976 to sick industries;

(b) if so, whether the scope was extended to profit making industries;

(c) the amount advanced under this scheme in 1978 to the industries referred to in (b) above;

(d) whether the scope has been further extended to replace the higher bank rate loans; and

(e) the details thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI ZULFIQUARULLAH): (a) and (b). The soft loan scheme seeks to provide loans at concessional rate of interest of 7.5 per cent per annum to eligible units in five selected industries viz. cotton textiles, jute, cement, sugar and specified engineering industries. Units are not eligible for assistance unless they are suffering from weakness relating to mechanical obsolescence and there are early prospects of viability as a result of modernisation. Priority is given in sanctioning assistance to sick units namely those whose paid up capital and reserves have been eroded to the extent of 50 per cent or more. The proportion of assistance given on soft terms depends on the extent of weakness of the concerned unit. This is so from the inception of the scheme and its scope has not been widened specifically for the benefit of profit-making units.

(c) Out of Rs. 140.39 crores sanctioned under the scheme to 93 units during 1978, the amount advanced to better off units works out to Rs. 62.23 crores covering 42 units.

(d) No, Sir.

(e) Does not arise.

श्रीमती इन्दिरा गांधी के काम पर असफल छात्रों के लिए उत्तरदायी अधिकारियों के विप्लव कार्यवाही

264. श्री राम विलास पातवाण : क्या उप-प्रधान मंत्री तथा वित्त मंत्री यह बताने की छुपा करेगे कि :

(क) क्या सरकार का विचार उन अधिकारियों के विप्लव कार्यवाही करने का है जो श्रीमती इन्दिरा गांधी के काम पर असफल छात्रों के लिए उत्तरदायी हैं;

(ख) क्या छात्र मारने वाले दल में वह अधिकारी सम्मिलित थे जो आपातकाल के दौरान बहुत सक्रिय थे और क्या वे अभी भी आयुक्त विभाग के 'जांच' शिप' में उच्च पदों पर काम कर रहे हैं; और

(ग) इस असफलता के लिए अधिकारियों के विप्लव क्या कार्रवाई करने का विचार है ?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सुब्रह्मण्यम-उत्तराह) : (क) सम्बन्धित अधिकारियों से स्पष्टीकरण मागे गए हैं और उन पर विचार किया जा रहा है ।

(ख) वर्तमान निरीक्षण विवेक (जांच) बम्बई में आयुक्त आयुक्त या जिल के काम में आपातकाल में तत्काल धीरे विदेशी मुद्रा उपसाहक क्रियान्वयन के अर्थ में वहाँ सख्त प्राधिकारी बनाया गया । आपातकाल के बाद निरीक्षण विवेक (जांच) के रूप में विप्लव किए जाने से पहले, वह अधिकारी कभी भी दिल्ली में तैनात नहीं रहा । यहाँ मन्त्री का कोई संशय नहीं है कि जिन अधिकारियों में संतोषी में प्राप्त किया जा, उनमें से कोई भी अधिकारी आपातकाल में असाधारण रूप से सक्रिय था । वे अधिकारी अपने पदों पर कार्य कर रहे हैं ।

(ग) श्री उत्तर को उत्तर जान (क) उत्तर उत्तर है ।